समीक्षा

पुरस्कार

प्रसाद की कहानियों में देशप्रेम, ऐतिहासिकता और मानव संघर्ष आदि का वर्णन हमें दिखाई देता है। पुरस्कार कहानी प्रेम और मुक्ति चेतना का विकास करके लिखी गई कहानी है। कहानी की शुरआत कोशल के प्रसिद्ध परम्परागत उत्सव से होती है, जिसमें राजा किसी भी कृषक की जमीन को बोने के लिए चुनता है और उसे उपहार स्वरूप स्वर्ण मुद्रा देता है। इस वर्ष मधूलिका की जमीन ली जाती है। मधूलिका वीर सेनापति सिंहमित्र की कन्या होती है। राजा बड़ा खुश होता है क्योंकि सिंहमित्र ने मगध के साथ युद्ध में विजय दिलाई थी। लेकिन मधूलिका राजा का उपहार लेना स्वीकार नहीं करती और अपनी भूमि पर काम करना चाहती है। इन सभी बातों को दूर खड़ा कोशल का राजकुमार अरूण देख रहा था। मधूलिका को दूसरी जगह भूमि दे दी जाती है और वहीं पर अपना गुजर बसर करती है। इसी दौरान उसका परिचय अरूण से होता है, वह नहीं जानती यह युवक कौन है और किस उद्देश्य से मेरे पास आया है।

अरूण राजा से मधूलिका की जमीन वापस दिलाने की बात भी कहता है। दोनों ही युवा है मधूलिका अरूण के बीच प्रेम हो जाता है। लेकिन दोनों ही मर्यादा में रहते हैं। मधूलिका को धीरे-धीरे अरूण की वास्तविकता का पता चल जाता है कि वह मगध पर आक्रमण कर उसे अपना गुलाम बनाना चाहता है और अपनी हार का बदला लेना चाहता है। मधूलिका भी वीर स्वर्गीय सिंहमित्र की कन्या थी। उसने प्रेम से बड़ा देशप्रेम सोचा और अरूण को सेना के हाथों पकड़वा देती है। अरूण को प्राण दंड़ दिया जाता है। वीर कन्या मधूलिका की बड़ी जय जयकार होती है। राजा ने पुरस्कार देने के बारे में पूछा तो मधूलिका ने कहा- मुझे कुछ न चाहिए। अरूण हँस पड़ा। राजा ने कहा- नहीं मैं तुझे अवश्य दूंगा। माँग ले। मधूलिका कहती है- तो मुझे भी प्राण दण्ड मिल। -कहती वह बन्दी अरूण के पास जा खड़ी होती हुई।

देशप्रेम

ऐतिहासिकता

Scanned with CamScanner

प्रसाद जिस समय कहानियाँ लिख रहे थे वह स्वाधीनता आंदोलन में उत्कर्ष का काल था। देश में क्रान्तिकारी आंदोलन सक्रिय था और ऐसे में प्रसाद इन घटनाओं से पूरी तरह निर्लिप्त हों, ऐसा संभव नहीं था। स्वाधीनता की चेतना उनके यहाँ बहुत मुखर रूप में नहीं बल्कि परोक्ष और मद्धिम रूप में दिखाई देती है और महत्वपूर्ण यह है कि प्रसाद ने इस मुक्ति चेतना को

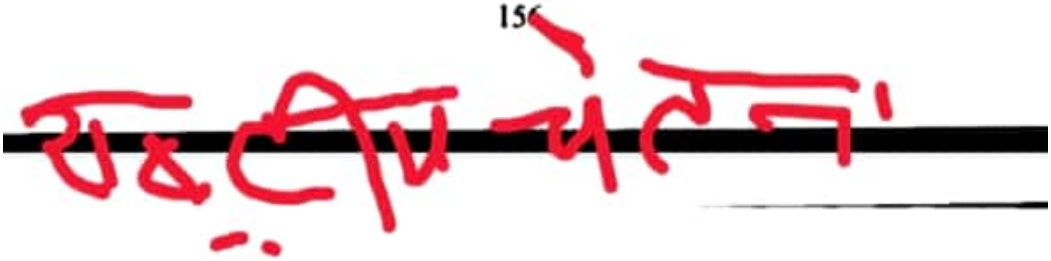

इतिहास से जोड़कर अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। कहना न होगा कि उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करने का प्रयास किया जहाँ उनके पात्र जातीय अभियान और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए कटिबद्ध दिखाई देते हैं। 'पुरस्कार' उनकी ऐसी ही कहानी है जिसमें प्रेम और मुक्ति चेतना का विकास लक्षित किया जा सकता है। कोशल के प्रसिद्ध परम्परागत उत्सव में राज्य द्वारा मधूलिका की कृषि-भूमि अधिगृहीत कर ली जाती है लेकिन वह उस भूमि के बदले राजा से पुरस्कार लेना स्वीकार नहीं करती क्योंकि वह उसकी पैत्रिक सम्पत्ति थी जिसे बेचना वह अपराध समझती थी। मधूलिका द्वारा स्वर्ण मुद्राओं का अस्वीकार और जीवन यापन के लिए कठिन श्रम उसकी देशभक्ति और ईमानदारी का प्रमाण है। राष्ट्रीय प्रेम एवं मुक्ति चेतना का एक अन्यतम उदाहरण और है जहाँ कोशल पर कब्जे की योजना बनाते अरुण का रहस्य वह राज सैनिकों के समक्ष उद्घाटित करती है और पुरस्कार स्वरूप खुद को प्राणदण्ड के लिए प्रस्तुत कर देती है क्योंकि राजा ने अरुण को प्राणदण्ड आदेश दिया था और मधूलिका अरुण से प्रेम करती थी। कितने गहन अंतर्द्वन्द्व से मधूलिका को गुजरना पड़ा होगा। एक तरफ मातृभूमि की रक्षा का सवाल और दूसरी ओर प्रेम का लहराता समुद्र। दोनों में से वह किसे चुने, निश्चय ही यह प्रश्न उसके अस्तित्व को मथ रहा होगा लेकिन मधुलिका ने जिस बुद्धिमानी का परिचय दिया उसे देश और प्रेम दोनों के प्रति उसकी ईमानदारी पर संदेह नहीं किया जा सकता। प्रसाद अपनी रचनाओं में प्रेम राष्ट्र के प्रति अथवा मनुष्य के प्रति, को विशेष महत्व देते हैं। मधुलिका का पुरस्कार के रूप में प्राणदण्ड की माँग और अरुण के साथ खड़ा हो जाना प्रेम की पराकाष्ठा का प्रमाण है।

प्रसाद की कहानियों में देशप्रेम, मानव प्रेम, मुक्ति चेतना इसी तरह अपना स्वरूप ग्रहण करते हैं। उनके यहाँ किसी बड़े संघर्ष का कोई चित्र नहीं दिखाई देता। भाषा के स्तर पर भी बेहद काव्यात्मक भाषा का प्रयोग करते हैं जिसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दों की भरमार होती है। ऐतिहासिक पौराणिक आख्यानों के साथ ही इस भाषा का व्यवहार संभव है। प्रेमचंद अथवा बाद के कथाकारों ने जिस कथाभूमि का स्पर्श किया है वहाँ प्रसाद की कोमलकांत पदावली काम न कर पाती। यही कारण है कि एक ही समय में भिन्न वस्तु का आग्रह होने के कारण प्रसाद और प्रेमचन्द की भाषा में बहुत अंतर दिखाई देता है। लेकिन यह जरूर है कि राष्ट्रीय आंदोलन में आदर्श और नैतिकता का जो भाव प्रबल था वह प्रसाद और प्रेमचन्द दोनों के कथा साहित्य में मिलता है। कहना न होगा कि प्रसाद ने इतिहास, पुराण और संस्कृति का उपयोग अपनी युगीन आवश्यकताओं के संदर्भ में जनता की इच्छा-आकांक्षाओं को स्वर देने के लिए ही किया है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2.
निर्वासित अरुण की दुर्ग पर अधिकार करने की क्या योजना थी?
उत्तर:
कोसल के कृषि उत्सव में पहली बार मगध का राजकुमार अरुण मधूलिका से मिला था और उसे प्रेम-प्रस्ताव दिया था परन्तु कृषक बालिका ने राजकुमार का वह प्रस्ताव स्तरानुकूल न होने से स्वीकार नहीं किया था। इसके पश्चात् अरुण मगध से निर्वासित कर दिया गया। वह कोसल आया। उसका विचार था कि वह मधूलिका की सहायता से कोसले पर अधिकार कर लेगा। उसे भरोसा था कि मधूलिका उसको प्रेम करती है और इस विजय में वह उसका सहयोग करेगी। अपनी योजना के अनुसार उसने मधूलिका को अपने प्रेम का वास्ता देकर अपनी योजना के बारे में बताया। वह जानता था कि कोसल राज्य कमजोर हो चुका है।

उसके सेनापति पहाड़ी दस्युओं का दमन करने के लिए नगर से बाहर गए हैं। महाराज मधूलिका को उसकी भूमि के बदले पुरस्कार देना चाहते हैं। उसने मधूलिका से कहा कि वह श्रावस्ती दुर्ग के दक्षिण में नाले के पास की भूमि महाराज से खेती के लिए माँग ले। उसके कहने पर मधूलिका ने वह भूमि महाराज से ले ली। अब अरुण ने रात के समय उस ओर से दुर्ग पर आक्रमण करके उस पर अधिकार करने की बात मधूलिका को समझाई और प्रभात होते ही उसे कोस
किया। परन्तु मधूलिका को यह उचित नहीं लगा। उसके

Chat With us on WhatsApp

Scanned with CamScanner

आदर्श प्रेमिका – मधूलिका आदर्श प्रेमिका है। वह अरुण के पहले प्रेम प्रस्ताव को चतुराई से अस्वीकार कर देती है। दूसरी बार उसको मगध से निर्वासित जानकर अपने समान मानकर उसका प्रेम स्वीकार कर लेती है। प्रेम के पागलपन में वह स्वदेश के विरुद्ध अरुण का साथ देती है परन्तु शीघ्र सँभल जाती है। वह स्वदेश को विदेशी के हाथों जाने से बचा लेती है परन्तु अरुण को प्राणदण्ड मिलने पर अपने लिए भी प्राणदण्ड माँगकर अपने पवित्र प्रेम का परिचय देती है। द्वन्द्वपूर्ण-मधूलिका का मन देशप्रेम और अरुण से प्रेम के बीच द्वन्द्व में पड़ा है। इस संघर्ष में विजय देशप्रेम की होती है। वह अपने प्रेम के लिए अपने जीवन का भी बलिदान देने को तैयार हो जाती है। महाराज के पुरस्कार माँगने का आग्रह करने पर कहती है-'तो मुझे भी प्राणदण्ड मिले।' इस प्रकार मधूलिका प्रसाद जी की अनुपम सृष्टि है।

प्रश्न 2.

निर्वासित अरुण की दुर्ग पर अधिकार करने की क्या योजना थी?

उत्तर:

कोसल के कृषि उत्सव में पहली बार मगध का राजकुमार अरुण मधूलिका से मिला था और उसे प्रेम-प्रस्ताव दिया था परन्तु कृषक बालिका ने राजकुमार का वह प्रस्ताव स्तरानुकूल न होने से स्वीकार नहीं किया था। इसके पश्चात् अरुण मगध से निर्वासित कर दिया गया। वह कोसल आया। उसका विच ... से कोसले पर अधिक ...

Chat With us on WhatsApp

मधूलिका उसको प्रेम करती है और इस विजय में वह

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1.

मधूलिका की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

मधूलिका जयशंकर प्रसाद के नारी पात्रों में अनुपम और अद्भुत है। वह नायिका प्रधान कहानी पुरस्कार की नायिका है। उसके चरित्र की अनेक विशेषताएँ हैं। कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

परम सुन्दरी-मधूलिका मोहक सौन्दर्य की स्वामिनी है। प्रसाद जी ने उसका वर्णन इन शब्दों में किया है। वह कुमारी थी, सुन्दरी थी, कौशेय वसन उसके शरीर पर इधर-उधर लहराता हुआ स्वयं शोभित हो रहा था।' राजकुमार अरुण उसके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर कहता है-"आह, कितना भोला सौन्दर्य! कितनी सरल चितवन !"

स्वाभिमानिनी और निर्भीक – मधूलिका स्वाभिमानिनी है। वह पूर्वजों की भूमि का मूल्य स्वीकार नहीं करती। वह परिश्रम करके जो कुछ मिलता है, उसी से गुजारा करती है। वह मधूक वृक्ष के नीचे जीर्ण पर्णकुटी में रहती है। मेधूलिका निर्भीक है। वह महाराज और उनके मंत्री से स्पष्ट शब्दों में कहती है-"राजकीय रक्षण की अधिकारी तो सारी प्रजा है मंत्रिवर-महाराज को भूमि समर्पण करने में तो मेरा कोई विरोध न था न है परन्तु मूल्य स्वीकार करना असंभव है।

Chat With us on WhatsApp

Scanned with CamScanner